P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारत में अध्यापक शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य

प्रमोद कुमार शर्मा
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
जे0 एन0 यू0 विश्वविद्यालय,
जयपुर,
राजस्थान, भारत

सारांश

शिक्षा सभ्य जीवन की आधार शिला है। शिक्षा एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जो केवल पुस्तकों –पाठ्यक्रमों या दीवारों के बीच बंधक बनकर नहीं रह सकती । एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को अपने मूल्य, आदर्श, नीति और रीति पहुंचाना अपनी तकनीक और कुशलता का आदान–प्रदान करना यदि शिक्षा है, तो यह प्रक्रिया आज के विधिवत् समाज में जारी है। प्राचीन काल में गुरूकुल प्रणाली थी । गुरू का स्थान ईश्वर और माता–पिता से भी बड़ा माना जाता था। शिक्षा मानव के मन को दिशा देकर राष्ट्र के व्यक्तित्व को प्रभावशाली ढंग से निखारती है। किसी भी राष्ट्र के उत्थान पतन का इतिहास के, कारखानों आदि को दिशा देने वाले मानव रूपी यंत्रों में प्राण प्रतिष्ठा की जाती है। दिन प्रतिदिन समाज में शिक्षा का बढता महत्व हमारी स्कूली और विश्वविद्यालयी व्यवस्था से अपनी उम्मीदें पाल रखा है। दूसरी ओर प्रथम पीढ़ी के विधार्थी को कक्षा में किस तरह सबके समान ही अधिगम अनुभव (ज्ञान) दिया जाये यह शिक्षकों के लिए भी एक चुनौती भरा कार्य है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली विदेशी शासकों की देन है। स्वतंत्रता के बाद विभिन्न शिक्षा आयोग जैसे राधाकृष्णन आयोग (1948) मुदालियर आयोग (1952) कोठारी आयोग (1964–66) राष्ट्रीय शिक्षा नीति आदि के माध्यम से समय–समय पर शिक्षा और शिक्षक–शिक्षा के क्षेत्र में अनेकों सुझाव प्रदान किये है शिक्षा मानव जगत की धरोहर है जिससे समाज के विकास की सही दिशा व दशा निर्धारित की जाती है। शिक्षा आयोग ने माना है कि भारत के भाग्य का निर्माण भारत की कक्षाओं में होता है क्योंकि बालक ही भारत के कल के भविष्य हैं। इनको सही ज्ञान सही मार्गदर्शन देना शिक्षक का पुनीत कर्तव्य माना जाता है।

मुख्य शब्द : भारत, अध्यापक, शिक्षा, वर्तमान, परिदृश्य।

प्रस्तावना

अध्यापक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह छात्रों को अच्छी तरह से समझता हो जिन्हें वह पढ़ा रहा है। शिक्षा बाल केन्द्रित होने के कारण यह आवश्यक है कि अध्यापक पाठ्यवस्तु के साथ साथ बालकों की प्रकृति को भी अच्छी तरह समझे। विभिन्न आयु वर्ग के बालकों में विकास व वृद्धि किस प्रकार से होती है, बालको की आवश्यकताऐं क्या है, बालक किस प्रकार से सीखते है, बालकों को सीखने के लिए प्रोत्साहित कैसे किया जा सकता है। बालकों के व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास कैसे किया जा सकता है ये सभी चीजे तभी संभव है जब शिक्षक प्रतिभाशाली होने के साथ–साथ बालमनोविज्ञान को भी अच्छी तरह से समझता है। उसके अन्दर विभिन्न शिक्षण युक्तियों एव कला कौशलों से दक्ष हो साथ ही विषय का प्रकाण्ड विद्वान हो । शिक्षित व प्रशिक्षित अध्यापक कक्षा शिक्षण को रोचक जीवन्त व प्रभावशाली बनाने में समर्थ होता है। अध्यापक शिक्षा की दशा में यदि कोई सुधार करता है तो उससे पूर्व हमें जानना चाहिए इसकी वर्तमान स्थिति क्या है और इस संबंध में अतीत में क्या कार्य हुआ है? हमारे देश के अध्यापक शिक्षा का इतिहास काफी लम्बा है और अध्यापक शिक्षा का उद्देश्य व्यावसायिक अध्यापक तैयार करना है। अध्यापक शिक्षा प्रणाली काफी जटिल है जिसमें कई तरह के कार्यक्रम है जो असमान भौगोलिक सीमाओं में व्याप्त है।

डेलर्स की शिक्षा रिपोर्ट ने शिक्षा के चार स्तम्भ बतलाएं है।

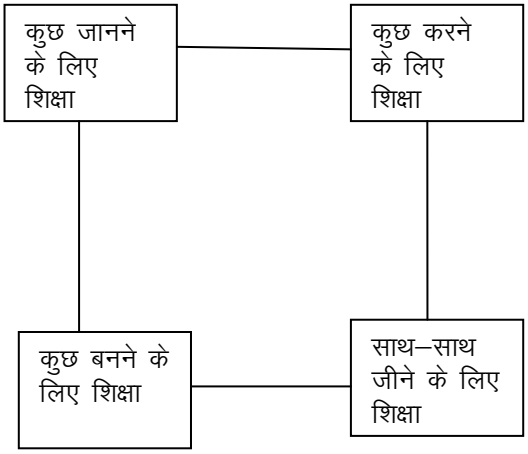

प्रथम स्तम्भ के लिए शैक्षणिक योग्यता आवश्यक है। दूसरे के लिए कार्य कुशलता की योग्यता जरूरी है इसके अतिरिक्त तीसरे और चौथे स्तम्भ के लिए मूल्यों की अवधारणा आवश्यक है। क्योंकि आज की शिक्षा प्रणाली में मर्यादा की (कमी) है अगर देकर आशा की चिंगारी नजर आती है कि बालको में मूल्यों का ज्ञान कहीं दिया जा सकता है तो वह कार्य विद्यालय/महाविद्यालय में हो सकता है उनमें चेतना लाने की आवश्यकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

अध्यापक शिक्षा के प्रशिक्षण संस्थानों के पाठ्यपुस्तकों में सुधार करने और पुस्तकीय ज्ञान के बजाय विद्यालयों में अध्ययन को अधिक व्यावहारिक बनाने पर जोर देने का अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में सैद्धान्तिक ज्ञान और प्रायोगिक कार्य दोनों पर समान बल दिया जाय।

वर्तमान परिदृश्य में भारत में शिक्षक शिक्षा में कमियां

आधुनिक समय में वैज्ञानिक आविष्कार खोजें (नवाचार) एवं ज्ञान का उद्भव तेजी से हो रहा है। इस परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए शिक्षको का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बदलाव की आवश्यकता है। वर्तमान परिदृश्य में भारत में शिक्षक शिक्षा में निम्न कमियों इस प्रकार है।

1. विषय वस्तु को समझने की बजाय रटने पर जोर
2. कक्षा–कक्ष में शिक्षण कार्य हेतु परम्परागत विधियों का उपयोग
3. विद्यालय/महाविद्यालयों में मूलभूत साधन एवं संसाधनों का अभाव
4. अनुभवी एवं दक्ष शिक्षकों का अभाव
5. शिक्षक शिक्षा संस्थानों की मान्यता पर सवाल
6. शिक्षक शिक्षा की प्रक्रिया पर प्रश्नचिन्ह
7. शिक्षक शिक्षा संस्थानों की दिन प्रतिदिन बढ़ती संख्या पर अंकुश न होना

वर्तमान परिदृश्य में भारत में शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में आवश्यक सुझाव

1. गुणवत्ता परक शिक्षण संस्थानों की स्थापना
2. योग्य एव अनुभवी शिक्षकों नियुक्ति को वरीयता
3. शिक्षकों के चयन का मापदण्ड एवं उनके शैक्षिक स्तर को महत्व देना।
4. शिक्षक शिक्षा संस्थानों में समय–समय पर भैतिक सत्यापन किया जाना
5. शिक्षक शिक्षा संस्थानों में मूलभूत साधन संसाधनों की उचित व्यवस्थां
6. छात्रों को नवाचारों के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना।
7. अध्यापक शिक्षा संस्थाओं में होने वाले शोषण व परीक्षाओ के सम्पादन और मूल्यांकन की समस्या से निजात पाने की आवश्यकता।
8. सैद्धान्तिक ज्ञान की अधिकता, प्रायोगिक कार्यो पर भी बल देने की जरूरत।
9. शैक्षणिक सत्र समय से न प्रारम्भ हो पाना इसको दूर किया जाना चाहिए।

हमारे शिक्षक जब यह समझने लगेंगे कि हम गुरू के आसन पर बैठे है और हमें अपने शिष्यों में जीवात्मा फूंकनी है जो अपने ज्ञान द्वारा उनके हृदय में ज्ञान और विद्या की ज्योति जगानी है अपने प्रेम द्वारा बालकों का उद्धार करना है । उनके अमूल्य जीवन का सुधरर करना है उस समय वे सत्य रूप से स्वाभिमान के अधिकारी बन सकेंगे तब ही शिक्षक शिक्षा का जो प्राचीन परिदृश्य शिक्षकों का रहा है आज वर्तमान समय में अपने उस रूप को चरितार्थ करेंगे।

निष्कर्ष

किसी भी देश का भविष्य उस देश के अध्यापकों के हाथ में होता है। कोठारी आयोग ने कहा है कि भारत के भाग्य का निर्माण भरत की कक्षाओं में होता है। अगर शिक्षक सही तरीके से प्रशिक्षित होगा तभी देश के भावी भविष्य का निर्माण कर सकता है। कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से उपर नहीं उठ सकता । स्वतंत्रता के पश्चात अध्यापक शिक्षा को सही ढंग से लागू करने व उसे बेहतर बनाने के लिए अनेको प्रयास समय–समय पर हुए है आज भी आवश्यकता इस बात की है कि योग्य एवं कुशल व्यक्तियों को इस पेशे में आकर्षित करने के लिए उन्हें उचित वेतन एवं सुविधायें उपलब्ध कराना होगा। अध्यापकों को कक्षा में विविध प्रकार के छात्रों के लिए अनुकूल शिक्षण की कला के अनुसरण की क्षमता विकसित करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ

डा0 रमन विहारी लाल, भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्याएं, राज प्रिटर्स, मेंरठ ।

भट्टाचार्य डा0जी0सी0 (2012) अध्यापक शिक्षा : विनोद पुस्तक मान्दी आगरा।

पाठक पी0डी0 (2012) भारतीय समाज में शिक्षा व शिक्षक विनोद पुस्तक मंदिर, नई दिल्ली।

बी.एल.ग्रोवर :आधुनिक भारत का इतिहास।

त्यागी,गुरूसरन दास :समसामयिक भारत और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।